Regd. with the Registrar of News Papers of India of PUN BIL/2002/07848 Postal Reg.No.GDP-41/2020 to 2022

मासिक अन्सारुल्लाह क़ादियान

मजिल्स अन्सारुल्लाह भारत का तर्जुमान

दिसम्बर/2021ई०

MONTHLY **ANSARULLAH** QADIAN

Magazine of Majlis Ansarullah Bharat

DECEMBER-2021

Chairman: Ataul Mujeeb Lone | Editor: Hafiz Syed Rasool Niyaz ✆9876332272 | Manager: Syed Tufail Ahmad Shahbaz ✆8968184270
Annual Subscription: Rs-210/- | Per Issue: Rs-20/- | Weight: 50-100 gms/Issue

17-11-2021 को यादगीर में आयोजित सालाना इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह ज़िल्ला यादगीर, गुलबर्गा, रायचूर, बीजापुर (कर्नाटक) में हाज़िर अंसार का दृश्य ।

17-11-2021 को यादगीर में आयोजित सालाना इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह ज़िल्ला यादगीर, गुलबर्गा, रायचूर, बीजापूर (कर्नाटक) के स्टेज का दृश्य ।

21-11-2021 को आयोजित सालाना इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह भरतपुर (मुर्शिदाबाद, पश्चिम बंगाल) में हाज़िर अंसार का दृश्य ।

21-11-2021 को आयोजित सालाना इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह भरतपुर (मुर्शिदाबाद, पश्चिम बंगाल) के स्टेज का दृश्य ।

10-10-2021 को आयोजित वार्षिक इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह सेंट थॉमस (चेन्नई) तमिल नाडु में इनामात वितरण के अवसर का एक दृश्य ।

03-10-2021 को आयोजित वार्षिक इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह कालीकट (केरल) के स्टेज का दृश्य ।

17-11-2021 को यादगीर में आयोजित सालाना इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह ज़िल्ला यादगीर, गुलबर्गा, रायचूर, बीजापूर (कर्नाटक) में आयोजित म्यूज़िकल चेयर मुक़ाबिला का दृश्य ।

29-11-2021 को आयोजित तरबियती इजलास मज्लिस अंसारुल्लाह अहमदाबाद (गुजरात) में श्री अताउल्लाह नुसरत साहब मुआविन सदर माल मज्लिस अंसारुल्लाह भारत भाषण देते हुए ।

17-11-2021 को यादगीर में आयोजित सालाना इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह ज़िल्ला यादगीर, गुलबर्गा, रायचूर, बीजापूर (कर्नाटक) में आयोजित कबड्डी मुक़ाबिला का दृश्य ।

17-11-2021 को यादगीर में आयोजित सालाना इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह ज़िल्ला यादगीर, गुलबर्गा, रायचूर, बीजापूर (कर्नाटक) में आयोजित रस्सा कशी मुक़ाबिला का दृश्य ।

निगरान
अताउल मुजीब लोन
सम्पादक
सय्यद रसूल नियाज़
उप-सम्पादक
शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री
09915379255
मैनेजर
सय्यद तुफ़ैल अहमद
शहबाज़
Ph. +91 84272 63701
कम्पोज़िंग
आसमा तय्यबा
प्रैस
फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रैस
क़ादियान
वार्षिक मूल्य : 210 ₹
विदेश : 50 अमरीकी डॉलर
प्रकाशन स्थान
ऐवाने अन्सार, भारत
क़ादियान - 143516
ज़िला : गुरदासपुर, पंजाब
फोन : 01872-220186
फैक्स : 01872-224186

بسم اللہ الرحمن الرحیم   نحمدہ ونصلی علی رسولہ الکریم   وعلی عبدہ المسیح الموعود

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْٓا اَنْصَارَ اللّٰهِ
سورۃ الصف آیت ۱۵

मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत का प्रवक्ता

मासिक पत्रिका

अन्सारुल्लाह

क़ादियान

Volume - 19 दिसम्बर 2021 **Issue - 12**

विषय सूची	पृष्ठ
दर्सुल क़ुर्आन	2
दर्सुल हदीस	2
हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेश	3
सम्पादकीय - क़ुर्आन करीम की शिक्षा को फैलाना का जेहाद।	4
सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह का निवेदन ख़िलाफत की हिफाज़त और औलाद की तरबियत	6
जलसा सालाना तब्लीग़ का बेहतरीन अवसर	8

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Ansarullah Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Ansarullah Bharat, P.o. Qadian, Distt. Gurdaspur 143516 Punjab India. Editor Syed Rasool Niyaz

قرآن کریم दर्सुल क़ुर्आन

هُوَ الَّذِیۡۤ اَنۡزَلَ عَلَیۡکَ الۡکِتٰبَ مِنۡهُ اٰیٰتٌ مُّحۡکَمٰتٌ هُنَّ اُمُّ الۡکِتٰبِ وَ اُخَرُ مُتَشٰبِهٰتٌ ؕ فَاَمَّا الَّذِیۡنَ فِیۡ قُلُوۡبِهِمۡ زَیۡغٌ فَیَتَّبِعُوۡنَ مَا تَشَابَهَ مِنۡهُ ابۡتِغَآءَ الۡفِتۡنَةِ وَ ابۡتِغَآءَ تَاۡوِیۡلِهٖ ۚ وَ مَا یَعۡلَمُ تَاۡوِیۡلَهٗۤ اِلَّا اللّٰهُ ۘ وَ الرّٰسِخُوۡنَ فِی الۡعِلۡمِ یَقُوۡلُوۡنَ اٰمَنَّا بِهٖ ۙ کُلٌّ مِّنۡ عِنۡدِ رَبِّنَا ۚ وَ مَا یَذَّکَّرُ اِلَّاۤ اُولُوا الۡاَلۡبَابِ (सूरः आले इम्रान 5)

अनुवाद -वही है जिसने तुझ पर किताब उतारी इसी में से मुहकम आयते भी हैं वह किताब की माँ हैं। और कुछ दूसरी मुतशाबेह (आयात) हैं। अतः वे लोग जिनके दिलों में टेड़ापन है वे फ़ित्ना चाहते हुए और इस की अर्थों के लिए इस में से इस का अनुसरण करते हैं जो आपस में मिलती जुलती है हालाँकि अल्लाह के सिवा और उन के सिवा जो इलम में सुदृढ़ हैं कोई उस की अर्थ नहीं जानता। वे कहते हैं हम उस पर ईमान ले आए, सब हमारे रब की तरफ़ से है। और अक़्ल मंदों के सिवा कोई नसीहत नहीं पकड़ता।

दर्सुल हदीस

عَنۡ اَنَسٍ رَضِیَ اللّٰهُ عَنۡهُ قَالَ قَالَ رَسُوۡلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیۡهِ وَسَلَّمَ مَثَلُ الۡمُؤۡمِنِ الَّذِیۡ یَقۡرَأُ الۡقُرۡاٰنَ مَثَلُ الۡاُتۡرُجَّةِ رِیۡحُهَا طَیِّبٌ وَطَعۡمُهَا طَیِّبٌ وَمَثَلُ الۡمُؤۡمِنِ الَّذِیۡ لَا یَقۡرَأُ الۡقُرۡاٰنَ مَثَلُ التَّمۡرَةِ طَعۡمُهَا طَیِّبٌ وَلَا رِیۡحَ لَهَا وَمَثَلُ الۡفَاجِرِ الَّذِیۡ یَقۡرَأُ الۡقُرۡاٰنَ کَمَثَلِ الرَّیۡحَانَةِ رِیۡحُهَا طَیِّبٌ وَطَعۡمُهَا مُرٌّ وَمَثَلُ الۡفَاجِرِ الَّذِیۡ لَا یَقۡرَأُ الۡقُرۡاٰنَ کَمَثَلِ الۡحَنۡظَلَةِ طَعۡمُهَا مُرٌّ وَلَا رِیۡحَ لَهَا۔

(अबू दाऊद किताबुल अदब)

अनुवाद - :: हज़रत अनस वर्णन करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया क़ुरआन करीम पढ़ने वाले मोमिन का उदाहरण नारंगी जैसा है कि जिसका मज़ा भी अच्छा होता है और ख़ुशबू भी उत्तम होती है। और इस मोमिन का उदाहरण जो क़ुरआन करीम की तिलावत नहीं करता वह खजूर की तरह है कि उस का मज़ा तो अच्छा है लेकिन उसकी ख़ुशबू नहीं होती। और उस फ़ाजिर का उदाहरण जो क़ुरआन-ए-करीम की तिलावत का आदी है रिहान के फूल की तरह है जिसकी ख़ुशबू तो अच्छी होती है लेकिन उस का मज़ा कड़वा होता है और उस फ़ाजिर का उदाहरण जो क़ुरआन-ए-करीम नहीं पढ़ता हन की तरह है जिसमें महक और ख़ुशबू भी नहीं होती और उस का मज़ा भी तीखा और कड़वा होता है

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दिव्य उपदेश

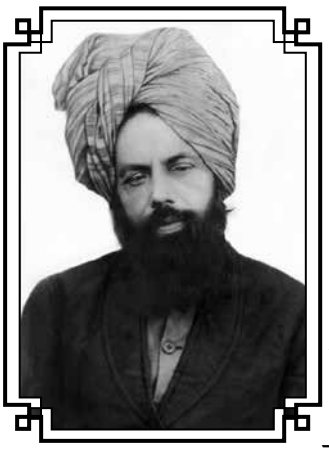

पवित्र क़ुर्आन है जो समस्त संसार के धार्मिक विवादों का निर्णय करने का अभिभावक होकर आया है।

" सब से सीधा मार्ग और बड़ा साधन जो विश्वास के प्रकाशों और निरन्तरता से भरा हुआ तथा हमारी आध्यात्मिक भलाई और ज्ञान संबंधी उन्नति के लिए पूर्ण पथ-प्रदर्शक है। पवित्र क़ुर्आन है जो समस्त संसार के धार्मिक विवादों का निर्णय करने का अभिभावक होकर आया है जिसकी एक-एक आयत और एक-एक शब्द अपने साथ सहस्त्रों प्रकार की निरन्तरता रखता है तथा जिसमें हमारे जीवन के लिए बहुत सा अमृत भरा हुआ है और बहुत से बहुमूल्य और दुर्लभ रत्न अपने अन्दर गुप्त रखता है जो प्रतिदिन प्रकट होते जाते हैं। यही एक उत्तम मापदण्ड है जिसके द्वारा हम सत्य और असत्य में अन्तर कर सकते हैं। यही एक प्रकाशमान दीपक है जो सत्य मार्गों की ओर मार्ग दर्शन करता है। निस्सन्देह जिन लोगों की सद्मार्ग से अनुकूलता और एक प्रकार का संबंध है उनका हृदय पवित्र क़ुर्आन की ओर खिंचा चला आता है और दयालु ख़ुदा ने उनके हृदय ही इस प्रकार के बना रखे हैं कि वह प्रेमी की भांति अपने उस प्रियतम की ओर झुकते हैं और उसके बिना किसी स्थान पर चैन नहीं पाते तथा उससे एक साफ़ और स्पष्ट बात सुनकर फिर किसी दूसरे की नहीं सुनते। उसकी प्रत्येक सच्चाई को प्रसन्नतापूर्वक और शीघ्र स्वीकार कर लेते हैं और अन्तत: वही है जो चमकने और हृदय की बात जानने का कारण हो जाता है और अद्भुत से अद्भुत प्रकटनों का माध्यम ठहरता है तथा प्रत्येक को उसकी योग्यतानुसार उन्नति पर पहुंचाता है। सदात्माओं को पवित्र क़ुर्आन के प्रकाशें के अधीन चलने की सदैव आवश्यकता रही है तथा जब कभी युग की किसी नवीन अवस्था ने इस्लाम को किसी अन्य धर्म के साथ टकरा दिया है तो वह तेज़ और काम आने वाला अस्त्र जो तुरन्त काम आया है पवित्र क़ुर्आन ही है। इसी प्रकार जब कहीं दार्शनिक विचार विरोधी रूप में प्रचारित होते रहे तो उस अपवित्र पौधे का समूल विनाश अन्तत: पवित्र क़ुर्आन ही ने किया और उसे ऐसा तिरस्कृत और अपमानित करके दिखाया कि दर्शकों के आगे दर्पण रख दिया कि **सच्चा दर्शन यह है न कि वह**। वर्तमान युग में भी जब पहले-पहले ईसाई धर्मोपदेशकों ने सर उठाया और निर्बुद्धि तथा मूर्ख लोगों को एकेश्वरवाद से हटाकर एक असहाय व्यक्ति का उपासक बनाना चाहा और अपनी अशुद्ध पद्धति को अपने वास्तविकता से दूर भाषणों से सुजज्जित करके उनके आगे रख दिया और हिन्दुस्तान में एक तूफ़ान मचा दिया। अन्तत: पवित्र क़ुर्आन ही था जिसने उन्हें ऐसा पराजित किया कि अब वे लोग किसी परिचित व्यक्ति को मुंह ही नहीं दिखा सकते और उनके लम्बे-चौड़े बहानों को यों पृथक करके रख दिया जिस प्रकार कोई काग़ज़ का तख़्ता लपेटे।

(इज़ाला औहाम । रुहानी ख़ज़ाइन भाग 3 पृष्ठ 381,382)

सम्पादकीय

क़ुरआन क़रीम की शिक्षा को फैलाने का जिहाद

जब हमारी यह आस्था है कि क़ुरआन करीम अल्लाह तआला की वाणी और पैग़ाम है जो हमारे नाम आया है। किसी भी पैग़ाम का पहला हक़ यही होता है कि उसे पढ़ा जाए, समझा जाए और पैग़ाम भेजने वाले के उद्देश्य से परिचय प्राप्त किया जाए। पैग़ाम किसी दोस्त का हो, दफ़्तरी ख़त हो, अदालती समन हो, कारोबारी पत्र हो यहां तक कि किसी दुश्मन का पैग़ाम भी हो तो अक्ल यह कहती हैं कि उसे वसूल करने वाले की पहली ज़िम्मेदारी होती है कि वह उसे पढ़े और समझे कि पैग़ाम भेजने वाले ने उसे क्या कहा है और इस से किस बात का तक़ाज़ा किया है। भाषा से परिचित न होना उनमें से किसी पैग़ाम को समझने में रुकावट नहीं बनता। हमारी बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है और यह क़ुरआन क़रीम का हक़ है कि हम उसे समझें और अल्लाह तआला के पैग़ाम और इच्छा से आगाही प्राप्त करने की कोशिश करें। चूँकि यह हमारी हिदायत के लिए है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

"क़ुरआन मजीद एक ऐसी पवित्र किताब है जो उस वक़्त दुनिया में आई थी जबकि बड़े बड़े फ़साद फैले हुए थे और बहुत सी आस्थाओं और अनुकरण की गलतियां प्रचलित हो गई थीं और लगभग सब के सब लोग बुरे कर्मों और ग़लत आस्थाओं में गिरफ़्तार थे। उस की तरफ़ अल्लाह प्रताप वाले क़ुरआन मजीद में इशारा फ़रमाता है। ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ अर्थात समस्त लोग क्या किताब वाले और क्या दूसरे सब के सब बुरी आस्थायों में पड़े हुए थे और दुनिया में बड़ा फ़साद था। अत: ऐसे ज़माने में ख़ुदा तआला ने समस्त झूठे अक़ीदों के खण्डन के लिए क़ुरआन मजीद जैसी सम्पूर्ण किताब हमारे मार्गदर्शन के लिए भेजी जिसमें समस्त झूठे धर्मों का रद्द मौजूद है और विशेष रूप से सूरत फ़ातिहा में जो पांचों वक़्त हर नमाज़ की हर रकअत में पढ़ी जाती है इशारा के तौर पर समस्त आस्थाओं का वर्णन है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 10 पृष्ठ 31 प्रकाशन 1984 ई प्रकाशन लन्दन)

फिर आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

"उपसाना की जड़ इलाही कलाम की तिलावत है क्योंकि महबूब का कलाम यदि पढ़ा जाए या सुना जाए तो ज़रूर सच्चे मुहब्बत करने वाले के लिए मुहब्बत पैदा करने वाला होता है और इशक़ की चिंगारी पैदा करता है।"

(सुर्मा चश्म आर्या रूहानी ख़ज़ाइन भाग 2 पृष्ठ 283)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं

"अब जो नेकी और जायज़ जिहाद है वह कुरआन क़रीम की शिक्षा को फैलाने का जिहाद है। इल्म का जिहाद है। प्रैस, मीडीया और लिट्रेचर के माध्यम से इस्लाम की ख़ूबसूरत शिक्षा को फैलाने का जिहाद है। यदि सीधा ख़ुद कोई इल्मी जिहाद में हिस्सा नहीं ले रहा, अपने कम ज्ञान के कारण से या किसी और कारण से, तो इशाअत लिट्रेचर और तब्लीग़ी सरगर्मीयों के लिए माली क़ुर्बानी का जिहाद है।"

(ख़ुत्बा जुम्अ13 दिसम्बर 2013 ई)

क़ुरआन क़रीम सीखने और सिखाने के सिलसिला

में अन्सारुल्लाह की ज़िम्मेदारी का वर्णन करते हुए सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला फ़रमाते हैं।

"दूसरी प्रमुख ज़िम्मेदारी अन्सारुल्लाह की यह है कि वे ख़ुद भी क़ुरआन क़रीम सीखें और अपनी औलादों को भी सिखाएँ। और फिर हर घर में तिलावत क़ुरआन का प्रबन्ध और निरन्तरता हो। यदि आप ख़ुद दैनिक उस की तिलावत करेंगे तो आप के बच्चे इस से नेक प्रभाव लेते हुए तिलावत के आदी बन जाऐंगे। मैंने वाकफ़ीन नौ बच्चों को यह हिदायत की हुई है कि वे रोज़ाना कम से कम दो रुकू की तिलावत क्या करें। आपने इन वाकफ़ीन नौ की तर्बीयत करनी है तो आपको अपना उत्तम नमूना उनके सामने पेश करना होगा। दैनिक कुछ रुकू तिलावत ज़रूर क्या करें कोई वक़्त उस के लिए निर्धारित करें सबसे अच्छा वक़्त तो फ़ज्र की नमाज़ के बाद है। इसलिए कोशिश करें कि फ़ज्र के बाद उस का प्रबन्ध हो।"

(मासिक अन्नासिर जर्मनी अगस्त सितम्बर 2007 ई)

दिल में यही है हर-दम तेरा सहीफ़ा चूमूं
क़ुरआँ के गिर्द घूमूं काबा मेरा यही है

दुआ है कि अल्लाह तआला हम सब को इस रंग में क़ुरआन क़रीम सीखने और सिखाने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। आमीन।

हाफ़िज़ सय्यद रसूल नयाज़

INDIAN AUTO

हर प्रकार की मोटर गाड़ियों के पार्टस सस्ते रेट पर खरीदें।

P. Ali Koya

CALICUT (KERALA)

"शिक्षा प्राप्त करना हर मुस्लिम पुरुष एवं स्त्री का कर्त्तव्य है"

MUSTAFA BOOK CO

All kinds of Academic Book of Kerala Board, CBSE, ISCS & Universities

Fort Road

KANNUR-1 (KERALA)

Mobile : 09895655426

SONET SOLUTIONS

PRIVATE LIMITED

No.41, II Cross, Doctors Layout,
Kasturi Nagar,
BANGALORE - 560043

तालिबे दुआ :

MUSADDIQ AHMAD

Mobile : 098451-98560

Tel : +91 (80) 41636612

Web : www.sonetsolutions.in

सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह का निवेदन

वर्ष 2022 ई क़ुर्आन क़रीम के लिए

मज्लिस अन्सारुल्लाह के संस्थापक हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो के वर्णन किए गए मज्लिस अन्सारुल्लाह के उद्देश्यों में से एक प्रमुख उद्देश्य यह है

"क़ुरआन क़रीम के सीखने और सिखाने का प्रबन्ध करे और शरीयत के आदेशों की हिकमतें लोगों पर स्पष्ट करे।"

(तारीख़ मज्लिस अन्सारुल्लाह पृष्ठ 78 चौधरी मुहम्मद इब्राहीम एम-ए)

इस प्रमुख उपदेश को सम्मुख रखते हुए मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत की तरफ़ से वर्ष 2022 ई को क़ुरआन करीम के रूप में मनाने के सिलसिला में मज्लिस शूरा अन्सारुल्लाह में एक परामर्श प्रस्तुत हुआ था। जिसकी मंज़ूरी सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने प्रदान फ़रमाई है। इस सिलसिला में शीघ्र ही एक सम्पूर्ण दिशा निर्देश बनाया जा रहा है। जिसे सर्कुलर के रूप में शीघ्र ही मज्लिसों में भिजवाया जाएगा। इंशा अल्लाह

भारत की मज्लिसों में कोई एक नासिर भी ऐसा न रहे जिसे कम से कम नाज़रा क़ुरआन क़रीम से न आता हो। सादा कुरआन पढ़ने वालें अनुवाद सीखने लगें और फिर क्रम से रोज़ाना कुछ हिस्सा तफ़सीर का पढ़ते रहें। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से हमारे जमाअत के वेबसाइट पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और ख़ुलफ़ाए करीम के तफ़सीरें अपलोड हैं। जहां से लाभ उठाया जा सकता है। दफ़्तर की तरफ़ से हर संभावित सुविधा प्रदान करने की कोशिश की जाएगी।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

"अत: तुम होशियार रहो और ख़ुदा की शिक्षा और क़ुरआन की हिदायत के विरुद्ध एक क़दम भी न उठाओ। मैं तुम्हें सच्च सच्च कहता हूँ कि जो व्यक्ति क़ुरआन के सात सौ आदेशों में से एक छोटे से आदेश को भी टालता है वह मुक्ति का दरवाज़ा अपने हाथ से अपने पर बन्द करता है। और सच्ची और सम्पूर्ण मुक्ति की राहें क़ुरआन ने खोलीं और बाक़ी सब उस के प्रतिबिम्ब थे। अत: तुम क़ुर्आन को ध्यान से पढ़ो और उस से बहुत ही प्यार करो ऐसा प्यार कि तुमने किसी से न किया हो। क्योंकि जैसा कि ख़ुदा ने मुझे सम्बोधित कर के फ़रमाया اَلْخَيْرُ كُلُّهٗ فِي الْقُرْآن कि समस्त प्रकार की भलाईआं क़ुरआन में हैं। यही बात सच है। अफ़सोस उन लोगों पर जो किसी और चीज़ को इस पर प्राथमिकता रखते हैं। तुम्हारी सारी सफलता और मुक्ति का स्रोत क़ुरआन है।"

(कुश्ती नूह रुहानी ख़ज़ाइन भाग 19 पृष्ठ 26-27)

क़ुरआन-ए-करीम की शिक्षाओं पर ख़ुद अनुकरण करने के लिए और दूसरों तक क़ुरआन मजीद की ख़ूबियों को पहुंचाने के लिए ज़रूरी है कि हम क़ुरआन करीम को पढ़ें और इस के चिरस्थायी शिक्षाओं से परिचित हों। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल

अज़ीज़ फरमाते हैं।

"जो भी क़ुरआन करीम की शिक्षा पर अनुकरण कर रहा है वह दूसरों से बहरहाल अलग नज़र आएगा। इस के अनुकरण की और रुहानी और एतिक़ादी हालत भी दूसरों से स्पष्ट रूप से उच्च स्तर पर पहुंची होगी। और क़ुरआन के मुक़ाबला पर जब हम दूसरों से बात करते हैं तब भी जब हम क़ुरआन की दलील से बात करेंगे तो क़ुरआन के मुक़ाबला पर कोई और किताब या कोई और धर्म खड़ा हो ही नहीं सकता। क्योंकि इस में ऐसी शिक्षाएं हैं, ऐसे तारीख़ी गवाहियां हैं, दूसरे धर्मों के मुक़ाबला पर ऐसे तर्क हैं जो प्रकाशमानदिन की तरह अपनी बरतरी प्रमाणित कर देते हैं। इस किताब के शुरू से आख़िर तक ख़ुदा तआला की तरफ़ से होने और अब तक अपनी असली हालत में सुरक्षित रहने का क़ुरआन-ए-करीम ऐलान करता है और हमेशा महफ़ूज़ रहने का क़ुरआन-ए-करीम का ऐलान है।"

(ख़ुत्बा जुमा 11जुलाई 2014 ई)

अन्सारुल्लाह के प्यारे सदस्यो ! अगले साल को क़ुरआन-ए-करीम के साल के तौर पर मनाने के लिए हुज़ूर अनवर ने कुछ परामर्श की मन्ज़ूरी प्रदान फ़रमाई है। जिन पर शुरू साल से ही अनुकरण करने की भरपूर कोशिश करने और हर माह रिपोर्ट भिजवाने का निवेदन है। दुआ है कि अल्लाह तआला हम समस्त अन्सार को इन हिदायतों पर अनुकरण करने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। आमीन

अताउल मुजीब लोन

सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत

Maqbool Ahmed
Cell : 9949310679
: 9949209561

Plant Medicine

Special Treatment for : Kidney Failure, Kidney Enlarge, Shrinkage, Kidney Gall Bladder Stone, Piles

H. No. 18-2-69/a, Jangammet, Falaknuma, Hyderabad - 53

Mob: 9008510546

Akmal Tailor

Hill Road, Madikeri - 571201

Pants, Shirts & All Gents Wears Stitching Here

Mobile : 9572858090, 9955553631

NEW MOBILE POINT

TABASSUM FANCY STORE

Mosabi Market No. 3, East Singhbhum
JHARKHAND Pin - 832104

Cell : 09886083030

زبیر احمد شحنہ

ZUBER

Engineering Works
Body Building All Types of
Welding and Grill Works
HK Road - YADGIR-585201
Dist. Gulbarga - Karnataka

जलसा सालाना तब्लीग़ का बेहतरीन अवसर

अदरणीय लईक अहमद डार,
मुरब्बी सिलसिला नज़ारत इलिया कादियान

अल्लाह तआला की किताब क़ुरआन हकीम के अनुसार इन्सान के जन्म का उद्देश्य अल्लाह तआला की इबादत करना है अर्थात अल्लाह तआला की सिफ़तों को अपने अंदर पैदा कर के उनको निखार कर ज़मीन पर उस का द्योतक बनना है। यह सार है इन्सानी ज़िन्दगी का। इसी लिए तो अल्लाह तआला ने ज़मीन तथा आकाश पैदा किए और कायनात के सिलसिले बनाए। और कहा कि मैं तो एक छुपा ख़ज़ाना था और मैंने इरादा किया कि मैं पहचाना जाऊं तो मैंने आदम की सृष्टि की। और इसीलिए हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से लेकर आज तक बेशुमार अंबिया आए और सब के आख़िर में हज़रत रसूले अरबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का जन्म मक्का में हुआ। आप अल्लाह तआला के उत्तम मज़हर ठहरे और इस तरह जिन तथा इन्सान की पैदाइश का उद्देश्य पूरा हुआ और फिर आप के सच्चे ग़ुलाम ने भी आना था जो वादा के अनुसार आए और उन्होंने इस्लाम के पुनर्उद्धार के लिए कार्रवाई शुरू फ़रमाई और अहमदिया जमाअत की स्थापना फरमाई।

इस्लाम की तब्लीग़ के लिए और लोगों को अल्लाह तआला का सच्चा बन्दा बनाने के लिए उनकी तर्बीयत के बारे कई माध्यन निकाले। इन माध्यमों में से एक प्रमुख माध्यम जलसा सालाना की स्थापना है जिसका मूल उद्देश्य वर्णन करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"इस जलसा से उद्देश्य और मूल अर्थ यह था कि हमारी जमाअत के लोग किसी तरह बार-बार की मुलाक़ातों से एक ऐसी तबदीली अपने अन्दर प्राप्त कर लें कि उनके दिल आख़िरत की तरफ़ सम्पूर्ण रूप से झुक जाएं और उनके अन्दर ख़ुदा तआला का ख़ौफ़ पैदा हो और वह पवित्रता और संयम और ख़ुदा तआला से डरना और परहेज़गारी और नर्मदिली और आपस में मुहब्बत और भाईचारा में दूसरों के लिए एक नमूना बन जाएं और विनय और विनम्रता और सच्चाई उन में पैदा हो और धार्मिक कामों के लिए सरगर्मी धारण करें।"

(मज्मूआ इश्तिहारात भाग 1 पृष्ठ 466)

अत: दीनी मुहिम्मात में एक प्रमुख और बुनियादी मुहिम तब्लीग़ इस्लाम है जिसके बारे में प्रथम दिन से अल्लाह तआला और इस के रसूल हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ताकीद फ़रमाई है

सम्मान्नीय पाठको! जलसा सालाना प्रत्येक वर्ष आयोजित किया जाता है और कादियान और रब्वह से निकल कर अब दुनिया के विभिन्न देशों में इस का आयोजन बड़ी शानो शौकत और सिलसिला रिवायतों के अनुसार किया जाता है जो जहां अहमदी दोस्तों की तर्बीयत का एक अवसर है वहां ग़ैर जो किसी रूप से भी इस में सम्मनिलत होते हैं वह इस जलसा के रुहानी माहौल से लाभ उठाते हैं और इस जलसा के माध्यम भी इन तक सच्चाई का पैग़ाम पहुंचाया जाता है

(1) जलसा सालाना तब्लीग़ का बेहतरीन अवसर है इस बारे में हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद, ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने ख़ुत्बा जुम्अ: 14 अक्तूबर 2016 ई में फ़रमाते हैं:

" ज़ाहिर में तो ये कार्यकर्ता काम कर रहे होते हैं लेकिन जो ग़ैर आते हैं उनके लिए भी

यह तब्लीग़ का माध्यम बन जाते हैं कई लोगों की हिदायत का कारण बन जाते हैं। इसलिए अमेरिका से आए एक जमाअत के बाहर के दोस्त जो बंगाली हैं और बंगाली अहमदियों के साथ आए थे, शहीदुर्रहमान इन का नाम है कहते हैं कि सारा जीवन मुल्लाओं से झगड़ते रहे और जो इस्लाम उन को पेश किया गया उस ने उन्हें सुन्नी मस्जिदों से दूर रखा। चरमपंथ से उन्हें नफरत थी उनकी पत्नी एक नेक औरत हैं उन्होंने आज्ञा दी कि आप जमाअत अहमदिया के जलसा पर जाएं। इसलिए इस जलसा में आकर अपने दोस्तों के साथ शामिल हुए। लगभग 91 बंगाली अमेरिका से आए थे। उन्होंने जमाअत अहमदिया के व्यक्तियों का प्रशिक्षण, प्यार और सम्मान देखा तो वे कहते हैं कि जलसा देखने के साथ इस्लाम की ओर पुन: लौट आया हूं। जलसा के अंतिम दिन वह लोगों से अलग एक कुर्सी पर बैठे हुए थे और भीड़ की वजह से उन्होंने खाने पर जाना पसंद नहीं किया। भीड़ थी। इतने में एक सेवक उनके पास आया और उन्हें भोजन और पानी दिया और फिर इस बात का भी इंतज़ार किया कि वे खाना ख़त्म करें ताकि वह सेवक उन के खाने का डिब्बा भी फेंक दे। इस घटना ने उन्हें इतना प्रभावित किया कि उन्होंने मुझे मुलाकात में बताया कि जलसा का उन पर बहुत गहरा प्रभाव है और इंशा अल्लाह तआला वह जल्द जमाअत में दाख़िल हो जाएंगे तो इस तरह जलसा से तब्लीग़ भी होती है और फिर यह है कि केवल एक सेवक की उच्च नैतिकता और उसकी मामूली सी सेवा उनके विचार को बदलने वाला बन गया। इस सेवक को तो शायद यह भी पता नहीं था कि वह अहमदी हैं या ग़ैर अहमदी। उसने तो एक भावना के अधीन सेवा की थी लेकिन यह सेवा इस ग़ैर में रूहानी परिवर्तन का माध्यम बन गई।

इसी तरह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं कि

जर्मन राजदूत यहां आए थे जो मुझे मिले। उन्होंने बताया कि चार सप्ताह पहले यहाँ आया हूँ। जमाअत का अधिक परिचय नहीं था यह विभिन्न देशों में रहते हैं। कहते हैं कि मैंने आज तक इस्लामी शिक्षाओं के बारे में ऐसा व्यापक संबधोन नहीं सुना।(उन्होंने मेरा अंतिम भाषण सुना था।) मैंने देखा है आपकी बड़ी सकारात्मक दृष्टि है। फिर मेरे बारे में कहते हैं कि वास्तविक इस्लाम को बयान किया जो शांति और न्याय और प्रेम की शिक्षा देता है और हर शब्द में एक तथ्य नज़र आ रहा था। काश दुनिया का मीडिया जितना समय इराक के बग़दादी और ISIS के तब्लीग़ को देता है अगर शांति के इस राजदूत को दे तो दुनिया में सच्ची शांति स्थापित हो जाए। फिर कहते हैं कि हर वाक्यांश उनका सत्य पर आधारित था और विश्व शांति की स्थापना के लिए एक दर्द था। कहते हैं मैं भी इस संदेश को जहां तक मेरे लिए संभव हुआ आगे फैलाऊंगा तो इस तरह अल्लाह की कृपा से ग़ैर लोग भी हमारे राजदूत बन जाते हैं।

(2) हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ एक और अवसर पर एक ग़ैर अहमदी मेहमान जो कि जलसा सालाना यूके 2018 ई में तशरीफ़ लाए थे उनके हवाला से फ़रमाते हैं:

"बेनिन के एक मेहमान वैलंटीन ह्वदय (Valentine Houde) साहिब जो कि आठ साल वज़ीर रह चुके हैं और इस वक़्त मैंबर आफ़ पार्लीमैंट हैं जलसा में शामिल हुए थे। कहते हैं कि मैंने जलसा सालाना से वह कुछ हासिल किया है जो मैं बहुत बड़ी रक़म ख़र्च करके भी हासिल न कर सकता था। एक शान्ति वाला और रुहानी माहौल है। और न कोई लड़ाई न झगड़ा। हर एक दूसरे की सेवा में व्यस्त है।

छोटे बड़े,बूढ़े जवान,औरतें बच्चियां सब उच्च आचरण के साथ दूसरे के आराम के लिए काम कर रहे हैं। मेरे लिए यह बहुत बड़ी बात है और हैरानी की बात है कि इतने बड़ी भीड़ में न कोई पुलिस न कोई फ़ौज नज़र आई। हर तरफ़ जमाअत अहमदिया के सेवक ही काम करते नज़र आ रहे थे। मैं सोच रहा था कि आज के दौर में निस्वार्थ हो कर काम करना किस तरह मुम्किन हो सकता है। फिर में इसी नतीजा पर पहुंचा हूँ कि यह सब कुछ जमाअत अहमदिया में ख़िलाफ़त के मार्गदर्शन के कारण ही मुम्किन है जिसने जमाअत के बच्चों बूढ़ों नौजवानों और औरतों सबकी इस रूप में में तर्बीयत की है और बचपन में ही उनको जलसा के प्रबन्ध सिखाना शुरू कर देते हैं। कहते हैं कि मैं कह सकता हूँ कि जमाअत अहमदिया जो इस्लाम दुनिया को प्रस्तुत करती है और जिस रूप में अपने मैंबरान की तर्बीयत कर रही है इस से बहुत जल्द दुनिया इस्लाम अहमदियत में दाख़िल हो जाएगी और अहमदियत ही दुनिया में सबसे बड़ा मज़हब होगी। (अहमदियत तो मज़हब नहीं इस्लाम ही दुनिया में सबसे बड़ा मज़हब होगा जो अहमदियत के माध्यम से ,मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के माध्यम से दुबारा नए सिरे से स्थापित होगा।)कहते हैं कि जमाअत अहमदिया जो शिक्षा पेश करती है दुनिया को इस की हक़ीक़ी अनुकरणी तस्वीर यहां जलसा में शामिल हो कर देखने को मिली। मैं इस जलसा की बहुत सुन्दर यादों को लेकर लंदन से वापस अपने देश लौट रहा हूँ। मेरे लिए यह क्षण वर्णन के बाहर और सुन्दर हैं।

(अलफ़ज़ल इंटरनैशनल 31 अगस्त 2018 ई से6 सितम्बर 2018 ई पृष्ठ 5)

(3)फिर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं:

"इंडोनेशिया से ही एक ग़ैर अहमदी स्कॉलर थे जो वहां एक यूनीवर्सिटी के दर्शन विभाग के प्रमुख भी हैं। वह कहते हैं कि मैंने पहली बार ऐसी मज्लिस देखी है जिस में हर लिहाज़ से और हर पहलू से रुहानी मामलों को समक्ष रखा जा रहा है। कहते हैं मैं इस जलसा को एक सुनहरी जलसा ख़्याल करता हूँ क्योंकि इस में सारी दुनिया से लोग ख़िलाफ़त के इर्द-गिर्द परवानों की तरह जमा हुए हैं। मैं एक इंडोनेशियन की हैसियत से ख़लीफ़उल मसीह की कोशिशों को सराहता हूँ जिन्होंने सारी दुनिया के लोगों को एक जगह में इकट्ठा करके भाईचारा का दृष्य प्रस्तुत किया है

असल में तो ख़िलाफ़त इस काम को आगे बढ़ा रही है हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जिस के लिए भेजे गए थे और अल्लाह करे कि उनको ज़माना के इमाम और ज़माना के मह्दी को मानने की भी तौफ़ीक़ मिले।

(अलफ़ज़ल इंटरनैशनल 31अगस्त 2018 ई से6 सितम्बर 2018 ई पृष्ठ 7)

इसी तरह हर साल जलसा सालाना जिनमें हुज़ूर अनवर स्वंय शिरकत फ़रमाते हैं अपने और ग़ैरों के विचारों का ईमान अफ़रोज़ वाक़ियात का तज़किरा फ़रमाते रहते हैंऔर बेशुमार वाक़ियात बयान करते हैं कि किस तरह ये अज़ीम जलसा और इस का रुहानी माहौल बहुतोंकी तब्लीग़ का माध्यम बन जाता है और जहांइस रुहानी प्रोग्राम से अहमदी मुस्तफ़ीज़होजाते हैंवहांग़ैरों तक भी पैग़ाम हक़ पहुंच जाता है और आज इस जदीद टैक्नालोजी के ज़माना में तो मीडीया केमाध्यम भी करोड़ों करोड़ लोगों तक पैग़ाम पहुंच जाता है

अत: अल्लाह तआला हमें तौफ़ीक़ प्रदान करे कि हम तब्लीग़ के दीनी मुहिम्मात के लिए सरगर्मी इख़तियार करने वाले हों और ये जलसा हमेशा उन उद्देश्यों को पूरा करता चला जाए जो उसके वर्णन हुए हैं। आमीन